

आदर्श-प्रश्नपत्रम् - 2023-24

कक्षा - दशमी

संस्कृतम् (कोड् सङ्ख्या-122)

समयः - 3 होराः

पूर्णाङ्काः - 80

सामान्यनिर्देशाः -

1. कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 11 पृष्ठानि मुद्रितानि सन्ति ।
2. कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 18 प्रश्नाः सन्ति ।
3. अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वारः खण्डाः सन्ति ।

‘क’ खण्डः	:	अपठितावबोधनम्	10 अङ्काः
‘ख’ खण्डः	:	रचनात्मककार्यम्	15 अङ्काः
‘ग’ खण्डः	:	अनुप्रयुक्तव्याकरणम्	25 अङ्काः
‘घ’ खण्डः	:	पठितावबोधनम्	30 अङ्काः

4. प्रत्येकं खण्डम् अधिकृत्य उत्तराणि एकस्मिन् स्थाने क्रमेण लेखनीयानि ।
5. उत्तरलेखनात् पूर्वं प्रश्नस्य क्रमाङ्कः अवश्यं लेखनीयः ।
6. प्रश्नस्य क्रमाङ्कः प्रश्नपत्रानुसारम् एव लेखनीयः ।
7. सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि ।
8. प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन अवश्यं पठनीयाः ।

‘क’ खण्डः
अपठितावबोधनम्

(10 अङ्काः)

1.	<p>* अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –</p> <p>ग्रीष्मकालानन्तरं वर्षाकालः आगच्छति । आकाशे सूर्यमाच्छाद्य मेघाः इतस्ततः विहरन्ति । तदा कृषकाः मुदिताः भवन्ति । यदा वृष्टिः भवति तदा भगवतः आशीर्वादा इव जलबिन्दवः भुवि निपतन्ति । आकाशे मेघाः नितरां गर्जन्ति । सर्वत्र उत्पन्नप्रकम्पनं भयङ्करं भवति । तदा मयूराः केकारवं कुर्वन्तः मुदिताः भूत्वा नृत्यन्ति । नद्यः तडागाः च जलपूर्णाः भवन्ति । कृषकाः क्षेत्राणि कृष्ट्वा बीजानि वपन्ति । क्रमेण सस्यसम्पद् वर्धते । परं यदा अतिवृष्टिः भवति तदा महती विपद् सञ्जायते । नदीनां तीरेषु विद्यमानानि लघूनि गृहाणि जले निमज्जितानि भवन्ति । पशुपक्षिणः, लघवः प्राणिनः च म्रियन्ते । एवमेव अनावृष्ट्या अपि आपदः सम्भवन्ति । तदा जलस्य अभावेन तडागाः शुष्यन्ति । वृक्षाः विनश्यन्ति । कृषिकर्म असाध्यं भवति । कृषिं विना धान्योत्पत्तिः एव न भवति । प्राणधारणवस्तूनाम् अभावेन जनाः क्लेशम् अनुभवन्ति । क्रमशः जीवनम् एव दुर्वहं भवति । अतिवृष्टेरनावृष्टेः च मूलं मानवः एव । सघनविपिनानाम् अनियन्त्रितनाशनेन पर्यावरणम् असन्तुलितं भवति । पर्यावरणप्रदूषणेन ऋतूनां गतयः परिवर्तिताः भवन्ति । अतः पर्यावरणस्य संरक्षणाय वयं जागरुकाः भवेम ।</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत – (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) कुत्र मेघाः इतस्ततः विहरन्ति? (ii) सर्वत्र उत्पन्नप्रकम्पनं कीदृशं भवति? (iii) जलस्य अभावेन के शुष्यन्ति?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) पर्यावरणं कथम् असन्तुलितं भवति? (ii) कदा भगवतः आशीर्वादा इव जलबिन्दवः निपतन्ति? (iii) प्राणिनः कदा म्रियन्ते?</p> <p>इ. अस्य अनुच्छेदस्य कृते उपयुक्तं शीर्षकं संस्कृतेन लिखत ।</p> <p>ई. यथानिर्देशम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(i) ‘कृषकाः क्षेत्राणि कृष्ट्वा बीजानि वपन्ति ।’ अत्र किं क्रियापदम्? (क) कृष्ट्वा (ख) बीजानि (ग) वपन्ति (घ) क्षेत्राणि</p>	<p>10</p> <p>1×2=2</p> <p>2×2=4</p> <p>1</p> <p>1×3=3</p>
-----------	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	----------------------------------------------------------------------------------------------

	<p>(ii) 'असन्तुलितम्' इति विशेषणपदस्य विशेष्यपदं किम्?</p> <p>(क) पर्यावरणम् (ख) विपिनम्</p> <p>(ग) ऋतुः (घ) मानवः</p> <p>(iii) 'अरण्यानाम्' इति पदस्य किं पर्यायपदं गद्यांशे प्रयुक्तम्?</p> <p>(क) मेघानाम् (ख) विपिनानाम्</p> <p>(ग) निमज्जितानाम् (घ) पर्यावरणम्</p> <p>(iv) 'दुःखिताः' इति पदस्य विपर्ययपदं किं प्रयुक्तम्?</p> <p>(क) भ्रमिताः (ख) जनाः</p> <p>(ग) आशीर्वादाः (घ) मुदिताः</p>	
--	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--

'ख' खण्डः

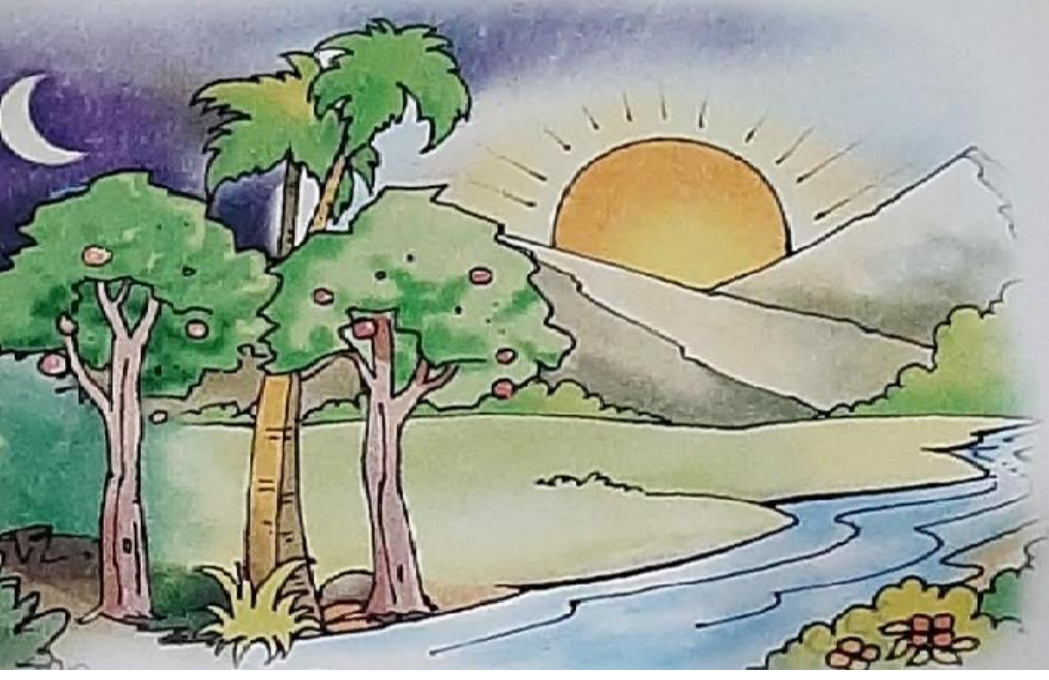
रचनात्मकं कार्यम्

(15 अङ्काः)

2.	<p>* भवान् दिवाकरः । स्वमातुलं निमन्त्रयितुं लिखितं पत्रं मञ्जूषायाः पदैः पूरयित्वा पुनः लिखत- वाराणसीतः दिनाङ्कः-----</p> <p>आदरणीय (i)</p> <p>सस्नेहं नमः ।</p> <p>अत्र कुशलं (ii) । भवान् इदं ज्ञात्वा अत्यधिकः प्रसन्नः (iii)</p> <p>यत् मम वार्षिकपरीक्षायाः परिणामः आगतः । अहं (iv) सर्वाधिकाङ्कान् प्राप्तवान् अस्मि । सर्वाधिकानाम् अङ्कानां (v) सर्वोत्कृष्ट-छात्र-सम्माननाय राज्यसर्वकारेण (vi) चितः अस्मि । तत्र सम्मानस्थले (vii) अभिभावकाः आमन्त्रिताः सन्ति । मम सम्मान-कार्यक्रमे भवान् अपि (viii) भवतु इति मम महती इच्छा वर्तते । यतोहि अभिभावकेषु भवान् अन्यतमः वर्तते । मातामहयोः चरणयोः मम (ix) प्रणामाञ्जलिः ।</p> <p style="text-align: right;">भवदीयः भागिनेयः (x)</p> <p style="text-align: center;">मञ्जूषा</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin: 10px auto; width: 80%;"> <p style="text-align: center;">दिवाकरः, अहम्, परीक्षायाम्, तत्रास्तु, मातुल!, भविष्यति, लब्धिकारणात्, सर्वेऽपि, उपस्थितः, साष्टाङ्गम् ।</p> </div>	½×10=5
----	---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	--------

3. * प्रदत्तं चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दानां सहायतया पञ्च वाक्यानि संस्कृतेन लिखत –

1×5=5



मञ्जूषा

वहति, उद्यानस्य, पुष्पाणि, नदी, वृक्षाः, आकाशे, पर्वतः,
दृश्यम्, हरीतिमा, सूर्यः, चन्द्रः, उदेति, प्राकृतिकम्, पादपाः।

अथवा

* निम्नलिखितं विषयम् अधिकृत्य मञ्जूषाप्रदत्तशब्दानां साहाय्येन न्यूनातिन्यूनं पञ्चभिः
संस्कृतवाक्यैः एकम् अनुच्छेदं लिखत -

1×5=5

“क्रीडा-महत्त्वम्”

मञ्जूषा

महत्त्वपूर्णम्, सर्वेभ्यः, अनिवार्यम्, स्वास्थ्याय, जीवनम्,
संयमः, स्थानम्, सफलाः, जनाः, क्रीडा।

4. * अधोलिखितानि वाक्यानि संस्कृतभाषया अनूद्य लिखत – (केवलं वाक्यपञ्चकम्)

1×5=5

1. देश की शिक्षाव्यवस्था अच्छी है।

The education system of the country is good.

2. क्या तुम विदेश में पढोगे?

Will you study abroad?

3. मैं सुबह आठ बजे विद्यालय जाता हूँ।

I go to school at eight in the morning.

4. आपके संस्कृत शिक्षक का नाम क्या है?

What is the name of your Sanskrit teacher?

5. संसार में सभी सुखी रहें। May everyone be happy in the world.	
6. छात्र अध्ययन करें। Students study.	
7. तुम सब श्लोक लिखो। Everyone writes verses.	

‘ग’ खण्डः

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

(25 अङ्काः)

5. * अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कुरुत- (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)	1×4=4
(i) अस्य पिता किं तपः+ तेपे। (ii) मम नृत्यं तु प्रकृतेराराधना। (iii) नय माम् अस्मात्+नगरात् बहुदूरम्। (iv) अन्योऽपि बुद्धिमाँल्लोके मुच्यते महतो भयात्। (v) भूरि परिश्रम्य किञ्चित्+वित्तम् उपार्जितवान्।	
6. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समासं विग्रहं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चित्वा लिखत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)	1×4=4
(i) न्यायाधीशः आरक्षिणं दोषभाजनम् अमन्यत। (क) दोषस्य भाजनम् (ख) दोषाय भाजनम् (ग) दोषं भाजनम् (घ) दोषेण भाजनम्	
(ii) काकचेष्टः विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्रः मन्यते। (क) काकस्य चेष्टा (ख) काकः चेष्टः इव (ग) काकः इव चेष्टा यस्य सः (घ) काकः चेष्टः	
(iii) जलद! त्वं पर्वतकुलम् आश्वास्य रिक्तोऽसि। (क) पर्वतेभ्यः कुलम् (ख) पर्वतानां कुलम् (ग) पर्वतेषु कुलम् (घ) पर्वताः कुलम्	
(iv) हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः। (क) हयनागाश्च (ख) हयानागाः (ग) हयनागः (घ) हयनागाः	
(v) धरातलं मलेन सहितं जातम्। (क) सहमलम् (ख) समलम् (ग) यथामलम् (घ) उपमलम्	

<p>7.</p>	<p>अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रकृति-प्रत्ययौ संयोज्य विभज्य वा उचितम् उत्तरं विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)</p> <p>(i) अन्योऽपि <u>बुद्धिमान्</u> लोके मुच्यते?</p> <p>(क) बुद्धि + मतुप् (ख) बुद्धि + टाप् (ग) बुद्धि + डीप् (घ) बुद्धि + इक्</p> <p>(ii) पुत्रस्य <u>अभ्यधिका</u> कृपा ।</p> <p>(क) अभ्यधिक + ठक् (ख) अभ्यधिक + टाप् (ग) अभ्यधिक + डीप् (घ) अभ्यधिक + तल्</p> <p>(iii) त्वं मीनान् छलेन अधिगृह्य <u>क्रूर + तल्</u> भक्षयसि ।</p> <p>(क) क्रूरतायै (ख) क्रूरतायाः (ग) क्रूरतया (घ) क्रूरतानाम्</p> <p>(iv) तदेवाहुः महात्मानः <u>सम + त्व</u> इति तथ्यतः ।</p> <p>(क) समत्वम् (ख) समता (ग) समताम् (घ) समतया</p> <p>(v) सा <u>तपस्विनी</u> । स्वापत्यम् एवम् निर्भर्त्सयति ।</p> <p>(क) तपस्वी + ठक् (ख) तपस्वी + तल् (ग) तपस्वी + इन् (घ) तपस्विन् + डीप्</p>	<p>1×4=4</p>
<p>8.</p>	<p>वाच्यानुसारम् उचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा अधोलिखितं संवादं पुनः लिखत - (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(i) भोः वासव! पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा मया?</p> <p>(क) रुद्ये (ख) रुद्यते (ग) रुद्यसे (घ) रोदिमि</p> <p>(ii) सः दीन इति जानन्नपि सः कृषकः पीडयति ।</p> <p>(क) तम् (ख) तेन (ग) सः (घ) ताः</p> <p>(iii) किम् एतत् भवता न?</p> <p>(क) दृश्ये (ख) दृश्यसे (ग) दृश्यते (घ) पश्यति</p> <p>(iv) पुत्राय बाल्ये महत् विद्याधनं यच्छति ।</p> <p>(क) पिता (ख) पित्रा (ग) पितरम् (घ) पितरः</p>	<p>1×3=3</p>

9.	<p>कालबोधकशब्दैः अधोलिखित-दिनचर्या पूर्यत- (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)</p> <p>(i) अधोक्षजः ब्रह्ममुहूर्ते ----- 3:30 जागर्ति ।</p> <p>(ii) सः ----- 4:00 योगाभ्यासं करोति ।</p> <p>(iii) तदनन्तरम् सः स्नात्वा ----- 4:30 सन्ध्योपासनां करोति ।</p> <p>(iv) पश्चात् सः ----- 5:15 वेदाभ्यासं करोति ।</p> <p>(v) सः ----- 11:45 मध्याह्नभोजनं करोति ।</p>	1×4=4
10.	<p>मञ्जूषायां प्रदत्तैः उचितैः अव्ययपदैः अधोलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानानि पूर्यत – (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(i) ----- आस्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम् ।</p> <p>(ii) अरे परभृत्! अहं ----- तव सन्ततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः?</p> <p>(iii) तत्तनयः ----- एव छात्रावासे अध्ययने संलग्नः समभूत् ।</p> <p>(iv) त्वं कारादण्डं लप्स्यसे इति प्रोच्य ----- अहसत् आरक्षी ।</p> <p style="text-align: center;">मञ्जूषा</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin: 0 auto; width: fit-content;">उच्चैः, यदि, तत्र, यत्र</div>	1×3=3
11.	<p>* अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कित-अशुद्धपदाय उचितपदं चित्वा वाक्यानि पुनः लिखत – (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(i) <u>मार्गं</u> गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श?</p> <p>(क) मार्गः (ख) मार्गे</p> <p>(ग) मार्गात् (घ) मार्गाय</p> <p>(ii) सः ह्यः पदातिरेव <u>चलिष्यति</u> ।</p> <p>(क) अचलत् (ख) अचलः</p> <p>(ग) चलतु (घ) चलेत्</p> <p>(iii) किं सा <u>कुपितः</u> एवं भणति?</p> <p>(क) कुपितौ (ख) कुपिता</p> <p>(ग) कुपिताः (घ) कुपिते</p> <p>(iv) सर्वे प्रकृतिमातरं <u>प्रणमति</u> ।</p> <p>(क) प्रणमतः (ख) प्रणमथः</p> <p>(ग) प्रणमावः (घ) प्रणमन्ति</p>	1×3=3

‘घ’ खण्डः

पठितावबोधनम्

(30 अङ्काः)

12.	<p>अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –</p> <p>अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान् । न्यायाधीशो बङ्किमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक् पृथक् विवरणं श्रुतवान् । सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षणं च दोषभाजनम् । किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत् । ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान् । अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ । तदैव कश्चिद् तत्रत्यः कर्मचारी समागत्य न्यवेदयत् यत् इतः कोशद्वयान्तराले कश्चिज्जनः केनापि हतः । तस्य मृतशरीरं राजमार्गं निकषा वर्तते । आदिश्यतां किं करणीयमिति? न्यायाधीशः आरक्षणम् अभियुक्तं च तं शवं न्यायालये आनेतुमादिष्टवान् । आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम् । तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ ।</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) न्यायाधीशः कं दोषभाजनम् अमन्यत?</p> <p>(ख) आरक्षी चौर्याभियोगे तं जनं कुत्र नीतवान्?</p> <p>(ग) न्यायाधीशः आरक्षणम् अभियुक्तं च किम् आनेतुम् आदिष्टवान्?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) उभौ कथं न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ?</p> <p>(ख) कर्मचारी समागत्य किं न्यवेदयत्?</p> <p>(ग) न्यायाधीशो बङ्किमचन्द्रः किं श्रुतवान्?</p> <p>* इ. निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) ‘अमन्यत’ इत्यस्य क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?</p> <p>(ख) ‘पटाच्छादितम्’ इति विशेषणपदस्य किं विशेष्यपदं प्रयुक्तम्?</p> <p>(ग) ‘समीपम्’ इत्यस्य किं पर्यायपदं प्रयुक्तम्?</p>	5
13.	<p>अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत –</p> <p>दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम् । शुचिपर्यावरणम् ॥</p> <p>महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम् ।</p> <p>मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम् ॥</p> <p>दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम् । शुचिपर्यावरणम् ॥</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) अत्र किं दुर्वहं जातम्?</p>	5

	<p>(ख) महानगरे कालायसचक्रं कदा चलति? (ग) पर्यावरणं कीदृशं भवितव्यम्?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) कालायसचक्रं किं कुर्वत् वक्रं भ्रमति? (ख) केन जनग्रसनं न स्यात्? (ग) का अस्माकं शरणम् अस्ति?</p> <p>* इ. निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) 'सर्वदा' इति पदस्य पर्यायपदं श्लोकात् चित्वा लिखत । (ख) 'सुकरम्' इति पदस्य विलोमपदं श्लोकात् चित्वा लिखत । (ग) 'दुर्दान्तैः दशनैः' इत्यनयोः पदयोः किं विशेषणपदम्?</p>	<p>1x2=2</p> <p>1x2=2</p>
<p>14.</p>	<p>अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत - (सिंहासनस्थः रामः । ततः प्रविशतः विदूषकेनोपदिश्यमानमार्गो तापसौ कुशलवौ) विदूषकः - इत इत आयौ! कुशलवौ - (रामम् उपसृत्य प्रणम्य च) अपि कुशलं महाराजस्य? रामः - युष्मद्दर्शनात् कुशलमिव । भवतोः किं वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम् एव, न पुनरतिथिजनसमुचितस्य कण्ठाश्लेषस्य । (परिष्वज्य) अहो हृदयग्राही स्पर्शः । (आसनार्धमुपवेशयति) उभौ - राजासनं खल्वेतत्, न युक्तमध्यासितुम् । रामः - सव्यवधानं न चारित्रलोपाय । तस्मादङ्ग-व्यवहितमध्यास्यतां सिंहासनम् । (अङ्गमुपवेशयति) उभौ - (अनिच्छां नाटयतः) राजन्! अलमतिदाक्षिण्येन । रामः - अलमतिशालीनतया । भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद् गुणमहतामपि लालनीय एव । व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात् पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम् ॥ रामः - एष भवतोः सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतूहलेन पृच्छामि-क्षत्रियकुल-पितामहयोः सूर्यचन्द्रयोः को वा भवतोर्वंशस्य कर्ता? लवः - भगवन् सहस्रदीधितिः ।</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) कुशलवयोः वंशस्य कर्ता कः? (ख) कौ अनिच्छां नाटयतः? (ग) कुशलवयोः मार्गं कः निर्दिशति?</p>	<p>5</p> <p>½x2=1</p>

	<p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) हिमकरः कस्मात् भावात् पशुपतेः मस्तके व्रजति?</p> <p>(ख) कुशलवौ रामम् उपसृत्य प्रणम्य च किं पृच्छतः?</p> <p>(ग) रामः कथं कुशलवयोः वंशपरिचयं पृच्छति?</p> <p>* इ. निर्देशानुसारम् उत्तरत- (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) 'ततः प्रविशतः विदूषकेनोपदिश्यमानमार्गो तापसौ कुशलवौ।' अत्र कर्तृपदं किम्?</p> <p>(ख) 'समीपं गत्वा' इत्यस्य पर्यायपदं किं प्रयुक्तम्?</p> <p>(ग) 'निर्गच्छतः' इति पदस्य विपर्ययपदं नाट्यांशात् चित्वा लिखत ।</p>	<p>1×2=2</p> <p>1×2=2</p>
<p>15.</p>	<p>* रेखाङ्कित-पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत - (केवलं प्रश्नचतुष्टयम्)</p> <p>(क) अहं वन्यजन्तूनाम् उपरि आक्रमणं कर्तारं <u>वनात्</u> बहिष्करिष्यामि ।</p> <p>(ख) मां <u>निजगले</u> बद्ध्वा चल सत्वरम् ।</p> <p>(ग) चौरस्य पादध्वनिना <u>अतिथिः</u> प्रबुद्धः ।</p> <p>(घ) गजः वन्यपशून् तुदन्तं <u>शुण्डेन</u> पोथयित्वा मारयति ।</p> <p>(ङ) आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् <u>विदुषां</u> वचः ।</p>	<p>1×4=4</p>
<p>16.</p>	<p>मञ्जूषातः समुचितपदानि चित्वा अधोलिखित-श्लोकस्य अन्वयं पूरयित्वा पुनः लिखत -</p> <p>आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त- मुद्दामदावविधुराणि च काननानि । नानानदीनदशतानि पूरयित्वा रिक्तोऽसि यज्जलद! सैव तवोत्तमा श्रीः ॥</p> <p>अन्वयः - हे जलद! (त्वं) (i) पर्वतकुलम् उद्दामदावविधुराणि (ii) च आश्वास्य नानानदीनदशतानि (iii) च यत् (स्वयं) रिक्तः असि, सा (रिक्तता) एव तव (iv) श्रीः (अस्ति) ।</p> <p style="text-align: center;">मञ्जूषा</p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; margin: 10px auto; width: fit-content;"> <p style="text-align: center;">उत्तमा, काननानि, तपनोष्णतप्तम्, पूरयित्वा</p> </div> <p style="text-align: center;">अथवा</p> <p>मञ्जूषायाः साहाय्येन श्लोकस्य भावार्थे रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखत -</p> <p style="text-align: center;">विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम् । अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः ॥</p> <p>भावार्थः- अस्य श्लोकस्य भावः अस्ति यत् (i) विचित्रे संसारे किञ्चिदपि वस्तु निरर्थकं न अस्ति । यतः यदा धावनस्य कार्यं भवति तदा (ii) प्रयोगः भवति परन्तु यदा (iii) कार्यं भवति तदा खरस्य एव (iv) भवति ।</p>	<p>1×4=4</p> <p>1×4=4</p>

मञ्जूषा		
अश्वस्य, भारवहनस्य, आवश्यकता, अस्मिन् ।		
17.	<p>अधोलिखित-कथांशं समुचित-क्रमेण लिखत -</p> <p>(क) स तामेव असान्त्वयत् 'गच्छ वत्से! सर्वं भद्रं जायेत' ।</p> <p>(ख) 'बहूनि अपत्यानि मे सन्ति' इति सत्यम् ।</p> <p>(ग) सर्वेषु सन्तानेषु जननी तुल्यवत्सला एव ।</p> <p>(घ) अचिरादेव चण्डवातेन मेघरवैः च सह प्रवर्षः समजायत ।</p> <p>(ङ) सुरभिवचनं श्रुत्वा इन्द्रस्य हृदयम् अद्रवत् ।</p> <p>(च) यतोहि अयम् अन्येभ्यः दुर्बलः ।</p> <p>(छ) तथापि दुर्बले सुते मातुः अधिका कृपा भवति ।</p> <p>(ज) तथापि मम अस्मिन् पुत्रे विशिष्टः स्नेहः ।</p>	½×8=4
18.	<p>अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसङ्गानुकूलम् उचितार्थं चित्वा लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम्)</p> <p>(i) पाषाणी सभ्यता <u>निसर्गे</u> न स्यात् ।</p> <p>(क) संसर्गे (ख) प्रकृतौ</p> <p>(ग) प्रसङ्गे (घ) पृथिव्याम्</p> <p>(ii) सा पुत्रौ चपेटया <u>प्रहृत्य</u> जगाद ।</p> <p>(क) प्रोत्साह्य (ख) विचारं कृत्वा</p> <p>(ग) प्रशंसां कृत्वा (घ) ताडयित्वा</p> <p>(iii) <u>दुर्बले सुते</u> मातुः कृपा भवति ।</p> <p>(क) वीरे पुत्रे (ख) निर्बले पुत्रे</p> <p>(ग) धीरे सुते (घ) प्रदत्तं सर्वम्</p> <p>(iv) <u>अर्थकार्श्येन</u> पीडितः पदातिरेव प्राचलत् ।</p> <p>(क) धनाभावेन (ख) अर्थाधिक्येन</p> <p>(ग) अर्थप्राप्तये (घ) सर्वम्</p>	1×3=3

-----0000-----